

धर्म जीवन

मई 2004

- ☆ देवात्मा के अमूल्य वचन
 - ☆ परम आवश्यक अहं बोध
 - ☆ धर्म और नैतिकता
 - ☆ शराब और टूटते हुए परिवार
 - ☆ रोशन होंगे नए चिराग
- ☆ लक्ष्य बनाएं अपनी छाप छोड़ें
- ☆ शुभ संग्राम

देवात्मा के अमूल्य वचन

औरों के लिए हानिकारक बनकर कोई जन खुद भी उसके बुरे फल से कदापि बच नहीं सकता। जिन को औरों की हानि करनी अच्छी लगती है, वह परले दर्जे के नीच आत्मा है। कई कहते हैं कि महाराज अपने कसूर को मानने और बताने में तो हमारी बेइज्जती होगी, हम ज़लील होंगे, हमने जो अपने आप को बड़ा अच्छा माना हुआ है, हम ज़लील होंगे, हमने जो अपने आप को बड़ा अच्छा माना हुआ है और बहुत श्रेष्ठ समझा हुआ है, वह सब कुछ मिट्टी में मिल जाएगा। इसके जबाब में नेचर यह कहती है “अरे मूर्ख! तू मुझ से नहीं छिप सकता और तू अपने कर्मों के बुरे फलों से कदापि नहीं बच सकता।” इसलिए प्रत्येक जन को अपने बुरे कर्मों से डरना चाहिए। वह नेचर का एक तुच्छ अंग होने की वजह से नेचर के और अंगों को बिगाड़ कर अपना भला नहीं कर सकता। जहां कहीं वह दूसरे की हानि करता है, वहां ही वह अपनी हानि करता है। इसलिए इस के भले का एक एक ही रास्ता है कि जहां आगे को वह ऐसे हानि करने से बचने का साधन करे, वहां वह पिछली हानि का परिशोध कर और हानिकारक बन कर अकड़ कर न चले। जिस को हानि पहुंचाई, उसके आगे ज़मीन पर गिरे और उससे क्षमा

प्रार्थना करे, उसके दुखिया दिल पर मरहम लगाए। वह अपनी हानि के सिलसिले को जितनी जल्दी बंद कर सके, उतनी ही उसकी हानि कम होगी। असल में वह तब ही बन सकेगा, जब उसके भीतर हानि परिशोध का सच्चा भाव पैदा हो सके और वह पवित्र हृदय के साथ धर्म की राह पर पड़ सकेगा।

नेचर सदा अपने नियमों में सच्ची है। कोई भी आदमी जहां चाहे, उसका तजरबा कर ले। नेचर का जो अटल नियम है, वह उससे कभी नहीं टलती। इसलिए तुम नेचर के अंग होकर उसके लिए हितकर बनो। नेचर सब को एक ही निगाह से देखती है, सबके लिए एक ही कायदा रखती है। उस का मौत और ज़िन्दगी, विनाश और विकाश, बेहतरी और अबतरी का सबसे लिए एक ही नियम है। यदि तुम भले नियम पर अमल कर सको और नीचता के बस में हो कर उसे लात न मारो, तो तुम्हारा भला होगा, वरना अवश्य बुरा होगा। इसमें किस की कुछ भी रूखायात नहीं होती और न हीं हो सकती। तुम्हारे कार्य का फल तुम्हारे लिए अवश्यम्भाव है, चाहे कोई कर्मचारी हो और चाहे कोई सेवक और चाहे किसी का बेटा या किसी का भी सम्बन्धी हो।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 2716914

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 5

मई 2004

सम्पादक

डा. विनोद खेड़ा

वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सह सम्पादिका

सुरजीत बराड़

परम आवश्यक अहं बोध

अहं 'मैं' के प्यार का नाम है। यह प्रत्येक मानव संतान को विरासत में मिलता है, कोई इससे खाली नहीं, केवल डिग्रियों का फर्क है। यह बहुत ही सूक्ष्म, परन्तु महापतनकारी और महा नीच भाव है। इसका सच्चा बोध पाना और उससे मुक्त होना विरले ही योद्धों का काम है। अधिकतर मनुष्यों में इसका बोध पाने की योग्यता ही नहीं होती और कबर तक पहुँचने तक भी इसका लेशमात्र भी उनको ज्ञान नहीं हो सकता, वर्षों के अनथक परिश्रम के बिना सहज रूप से यह बोध प्राप्त नहीं हो सकता। अहं बोध के बिना सारा जीवन, विशेषकर अध्यात्मिक जीवन निष्फल जाता है। अपने विषय में मनुष्य पूर्ण अंधकार में रहता है। सत्य लक्ष्य से भ्रष्ट हो जाता है और स्वभाविक ही मिथ्या लक्ष्य को अपना लेता है। इस बोध के बिना मनुष्य को आत्मा के रूप, उसके जीवन, उसकी हानि और नाश का कोई बोध नहीं होता और इस बोध की अवर्तमानता में आत्मा मौत के राह पर पड़ जाता है और महा हानि उठाना एक स्वभाविक बात है।

नीच और उच्च गति का बोध, पाप का

सच्चा बोध, अपने आत्मा के पतन का बोध, उसकी मौत का सच्चा डर वा बोध, अहं बोध के बिना यह सब बोध उत्पन्न ही नहीं हो सकते। अपने भीतर आए परिवर्तन का कोई बोध पैदा नहीं होता। किसी उच्च भाव के पैदा करने और नीच भाव मिटाने का कोई लक्ष्य नहीं बनता। इस प्रकार अहं बोध के बिना किसी धार्मिक वा अधार्मिक व्यक्ति का समूचा जीवन ही निष्फल जाता है।

भगवान देवात्मा ने अहं अनुराग या घमंड और घृणा भाव को “मनुष्य के लिए महापतनकारी और महा नीच भाव” बताया है।

और भी बार बार गुरु महाराज ने इसके सम्बंध में कुछ प्रकार फरमाया है: -

“धर्म-मार्ग पर चलने वालों के मार्ग में उनके भीतर की अहं अनुराग की शक्ति बहुत खौफनाक तौर पर विध्वन डालती है।”

“घमंड का प्रबल अधिकार रखने वाले मनुष्यों के लिए, भलाई के सब मार्ग बंद हो जाते हैं, इसलिए ऐसे जन की जिन्दगी पर यह मोहर लगा दी है, कि वह बेहतर न बन सके।”

“अहं-अनुरागी के हृदय पर जब भी कोई चोट लगती है, तब ही वह लड़ाई, झगड़ा, रोना, पीटना, मार पिटाई और स्थापा करना शुरू कर देता है। घर-घर शहर-शहर और गांव-गांव में इसी कारण बड़ी-बड़ी लड़ाईयां हो रही हैं। जबरदस्त आदमी इसी अहं के अनुराग के कारण दुख देने वाले को जान से ही मार देना चाहते हैं।”

“धर्म के इच्छुक जन को अहं अनुराग मूलक घमंड और घृणा के विषय में ज्ञान और बोध लाभ करने और उनसे मुक्त होने के लिए बहुत सारा मसाला अपने पास जमा रखना चाहिए।

“नीच घृणा भाव आत्मा के जीवन के लिए विनाशकारी है - - - आत्मा के जीवन को उसकी नीच घृणाओं का ज़हर नष्ट कर देता है।”

“नीच घृणा का भाव महा हानिकारक रोग है। जिन जनों के भीतर यह महा नीच भाव प्रबल रूप में वर्तमान होता है, उनका कुछ भी नहीं बनता, यह ज़हर-ए-कातिल है।”

“अहं के वश होकर मनुष्य अपनी झूठ-मूठ बहुत ज्यादा कीमत लगाता है। अपने आपको बहुत बड़ा समझता है। जो काम वह नहीं कर सकता, उसे करने का भी दम भरता है।”

“अहं अनुरागी देवात्मा से फट जाता है, इसलिए उस तक देवात्मा की रोशनी पहुंचने का भी मार्ग बंद हो जाता है।”

“अहं अनुरागी जन झूठ को सत्य समझता है। वह कहता है कि मैं सब कुछ जानता हूं।”

“अहं अनुरागी जन कभी अपने सम्बंध में विचार नहीं कर सकता कि मेरे भीतर कौन कौन से रोग हैं। वह समझता है कि मैं जो कुछ जानता हूं, वह ठीक जानता हूं। वह सचाई को लात मारता है।”

“नेचर का यह नियम है कि जिस चीज़ को तुम प्यार करोगे, उसके तुम पक्षपाती बन जाओगे। मनुष्यों में जो सबसे बड़ा रोग फैला हुआ है, वह अहं अनुराग है” (अपने आपको प्यार)

“किसी जन में जितना अहं अनुराग बढ़ा हुआ होता है, उतनी ही वह अपनी मर्जी पूरी करना चाहता है।” (अपनी इच्छा, रुचि वा मर्जी का प्यार)

अहं अनुराग अत्यंत घातक शक्ति है। इसलिए यह महा भयानक है। जहरीली गैस की तरह दिखाई नहीं देती। परन्तु परिणाम दिखाती है। जितना इसका अधिक अधिकार होता है, उतना ही उसका पता नहीं चलता।

अहं अनुराग के साथ मनुष्य अंधा, पागल, मिथ्याचारी और उल्टा हो जाता है और उस अवस्था का उसे बिल्कुल पता नहीं लगता।

अहं अनुराग से मनुष्य अपने आपको वह कुछ देखता है और विश्वास करता है, जो वास्तव में वह बिल्कुल नहीं होता। जो कुछ वह वास्तव में है, उस वास्तविक अवस्था को वह देख नहीं सकता। स्वार्थी अपने आपको स्वार्थी नहीं देख सकता, ईर्ष्या, द्वेष परायण अपने इस रोग को नहीं देख सकता। कंजूस अपने आपको दानवीर समझता है। कोई हितैषी उसे समझाना चाहे तो उसे भी उल्टे रूप में देखता है।

अहं अनुराग मनुष्य तक देव ज्योति पहुंचने नहीं देता, इस कारण उसका ध्यान अपनी तरफ, अपने दोषों की तरफ नहीं जा सकता। अहं अनुराग देवात्मा के प्रति सच्ची श्रद्धा और विश्वास पैदा नहीं होने देता। इसलिए न तो मनुष्य को देवात्मा के देवरूप की कोई मान्सिक उपलब्धि हो सकती है और न ही हार्दिक। देवात्मा के अतिशय महान

अध्यात्मिक रूप की उपलब्धि न होने से मनुष्य देवात्मा के सर्वश्रेष्ठ सम्बंध सूत्र से ही फटा रहता है, इस प्रकार उसका जीवन पूर्ण व्यर्थ और निष्फल हो जाता है। मनुष्य देवात्मा का सेवक वा कर्मचारी होकर, उनके मिशन में सारी उमर फना करके, दूसरे सेवा वा संग्राम के काम करके भी खाली का खाली इस संसार से चला जाता है।

अहं बोध के बिना, गुरु मिशन में जोश खरोश से संग्राम थोथे और हानिकारक हो जाते हैं। मनुष्य सोचता है कि मैं अपना भला कर रहा हूँ, दूसरों का भला कर रहा हूँ, परन्तु खुराक अकसर अहं ही ले लेता है। उच्च भावों द्वारा परिचालित न होने से अहं अनुराग किए कराए पर पानी फेर देता है। अहं अनुराग की हानियों का ब्यान करना कठिन है।

गुरु मिशन में कारज करने वाले सौभाग्यवान जनों के लिए अहं बोध की प्राप्ति अति आवश्यक है।

यह सभा करवाकर, प्रचार दौरे करके, लोगों के पाप वा मिथ्या छुड़वाकर, दान देकर, साहित्य छपवाकर, सत्संग के अधिवेशन और सैशन रखकर, अच्छी संख्या में जनों को इकट्ठा करके घोर तपस्या की बहुमुली खीर को अपने अहं के ज़हर से जान लेवा बना देता है। जिसको हम अमृत समझकर खा रहे होते हैं, वह अकसर जानलेवा विष बन जाता है।

इसलिए हमें गुरु महाराज के काम के साथ साथ सबसे अधिक फिकर वा डर अहं का बोध प्राप्त करने का करना चाहिए, नहीं तो सारा संग्राम व्यर्थ वा स्वांग बनकर रह जाएगा।

जैसे मनुष्य होना और नीच सुख अनुरागी

होना एक ही बात है, उसी प्रकार मनुष्य होना और अहं अनुरागी होना एक ही बात है। हम सब अहं अनुरागी हैं, परन्तु हम इस भ्रान्ति के शिकार रहते हैं कि फलां तो महा अहं अनुरागी है, शुकर है मैं तो इससे बचा हुआ हूँ, या है भी तो बहुत थोड़ा है। मैं तो दीन भावी हूँ। किसी के साथ सींग नहीं फंसाता, प्रेम पूर्वक मीठा बोलता हूँ। ऐसा सोचना महा अंधकार की सोच है। मनुष्य सदा दूसरों के दोषों और अपने आपको निर्दोष रूप में देखता है। परन्तु सब मनुष्य बुरी तरह अहं अनुरागी हैं। इसलिए हम सब को ही इस महा कोढ़ को प्रकृत रूप में देखने, जानने और उससे मुक्त होने का सच्चा फिकर करना चाहिए।

केवल फिकर करने से भी कुछ नहीं हो सकता, इसके लिए कठिन और लम्बी साधना की निरन्तर आवश्यकता है। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज का उदाहरण हमें सामने रखने की आवश्यकता है। जीवन भर की कड़ी साधना वा तप द्वारा आप उससे मुक्त होने के मार्ग पर पड़े। उतने या उससे भी बढ़कर तप करने के लिए हमें तत्पर रहना चाहिए। श्रद्धेय श्रीमान जी की तरह 20 - 30 वर्ष इससे छुटकारा पाने के लिए संग्राम किए बिना अपने आपको अहं मुक्त समझना और देवात्मा के निकट समझना बहुत बड़ा धोखा है। एक बड़ा छलावा है। जिसने यह तप आरम्भ ही नहीं किया, वह अपने आपको अहं मुक्त समझे, यह एक कैसर के रोगी का अपने रोग से अज्ञात रहने जैसा है।

हमारा ध्यान अपने अहं की ओर जा सके हम अधिक से अधिक संख्या में अपने अहं की सोझी पा सकें, ऐसा आशीर्वाद महान सत्गुरु जी का हम पिंगलों को प्राप्त हो सके।

(बलदेव सिंह)

धर्म और नैतिकता

एक अच्छे पढ़े लिखे जन ने जब यह कहा है कि सब धर्म ही नैतिकता का पाठ पढ़ाते हैं, और अच्छे आचरण का नाम ही धर्म है, तो मेरे मन में कुछ विचार पैदा हुए कि क्या यह सच्चाई है? इसमें संदेह नहीं कि धर्म की आवश्यकता इसलिए पड़ी थी कि मनुष्य कुछ सदमार्ग पर चल सके, परन्तु धीरे धीरे धर्म और नैतिकता दो अलग विषय बन गए। धर्म को लेकर जातिवाद और कई तरह की बहुत हानिकारक रीति रिवाजों की उत्पत्ति हो गई और नैतिकता एक अलग विषय बन गई।

अब धर्म केवल पूजा, पाठ, नाम जपने, स्वर्ग नर्क के वायदे और मिथ्या विश्वासों को बढ़ाने अपने से भिन्न धर्म मत रखने वालों के प्रति घृणा करने का नाम रह गया, जबकि नैतिकता का आधार ही प्यार, सच्चाई, सहनशीलता, ईमानदारी, दया अपने कर्तव्य की निष्ठापूर्वक पालना, अपने देश वा समाज के लिए वफादारी, यहां तक कि विश्व एकता को लाने का नाम है। ऐसी नैतिकता, जिसका पालन करने से प्यार, शान्ति का वातावरण बन सके।

आज के युग में विज्ञान का बोलबाला है और विज्ञान एक है परन्तु धर्म भिन्न है। वैज्ञानिक रूप से एक चीज़ की सही परिभाषा एक ही हो सकती है। यही कारण है कि धर्म भिन्न भिन्न है, परन्तु नैतिकता के नियम सारे विश्व के लिए एक हैं।

वास्तव में धीरे धीरे धर्म का नैतिकता से कोई सरोकार नहीं रहा :-

(1) नैतिक नियम हमें सिखाते हैं कि प्रत्येक

मनुष्य बराबर हैं, चाहे किसी जाति वा देश के हों परन्तु धर्म ने साम्प्रदायिकता फैलाकर सब जगह टुकड़े टुकड़े कर रखे हैं। नैतिकता मानवता सिखाती है, तो धर्म साम्प्रदायिकता।

(2) स्वै रक्षा के अतिरिक्त खून बहाना नैतिकता के विरुद्ध है, परन्तु धर्म के नाम पर खून की नदियां बह गई हैं, जिसका इतिहास साक्षी है।

(3) धर्म हमें सम्बंधों को छोड़ने का पाठ पढ़ाता है, परन्तु नैतिकता हमें सम्बंधों में जीना सिखाती है।

(4) भारत धर्म के स्थानों अर्थात् मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों से अटा पड़ा है। राम मन्दिर अयोध्या का विवाद देश की शान्ति को भंग कर रहा है। अनपढ़ जनता को गुमराह करे राजनीतिज्ञ अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं, यदि इन धर्म स्थानों पर नैतिकता सिखाई जाती तो यह समस्या चुटकियों में हल हो सकती थी। परन्तु धर्म का शान्ति से कोई वास्ता ही नहीं रहा।

(5) धर्म का मार्ग कर दिया गया। नाम जपो पार उतरो, स्नान रको सब पाप धुल जाएंगे। सारे पाप परमात्मा, वाहेगुरु वा अल्ला को याद करके बरखो जाते हैं, परन्तु नैतिक नियमों का मार्ग कठिन है। यही नहीं यदि आप खुद जाप नहीं कर सकते तो पैसे देकर किसी और से पाठ करवा दो, तो भी आपकी मुक्ति हो जायेगी। ब्राह्मणों, पुरोहितों के द्वारा ऐसा करवा कर मनुष्य संतुष्ट हो जाता है। आजकल तो टी. वी. सीरियल में सत्यनारायण की पूजा, देवी की पूजा दिखाकर मनुष्यों को और भी

अंधकार की ओर धकेला जा रहा है। मनुष्य का प्राकृतिक झुकाव सरल मार्ग की ओर होता है। धर्म का मार्ग आसान बनाकर मनुष्य की इस सुख परायण प्रकृति का धर्म के ठेकेदारों ने लाभ उठाया है। नैतिकता का मार्ग बेहद कठिन है। जिस देश में ऐसी कथाएं प्रचलित हों कि अजामिल ने सारी उमर गुनाह भरी ज़िन्दगी गुज़ारी परन्तु मरते समय अपने बेटे नारायण का नाम लिया और उसके सब पाप धुल गए और उसकी स्वर्ग में सीट बुक हो गई, वहां कोई मनुष्य नैतिकता के कठिन मार्ग को क्यों अपनाएगा।

जितनी धार्मिक जंगें हुई हैं, जितना खून बहा है, उसमें सबसे अधिक धर्म में गहरी आस्था रखने वालों का हाथ है। महमूद गज़नबी अल्ला का गहरा विश्वासी था और अल्ला के नाम पर उसने जहाद का ऐलान किया और जो हिन्दुओं पर कहर ढाया, उसका इतिहास साक्षी है। ईसाईयों और मुसलमानों में धार्मिक जंगें हुई। भारत में तो जगह जगह संप्रदायक दंगे होते हैं। प्रचारक, दया, दान, हमदर्दी प्यार, सेवा पर लम्बे लम्बे लैक्चर देते हैं, परन्तु धार्मिक उन्माद उन्हें एक दूसरे का शत्रु बन रहा है।

मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है, परन्तु नैतिकता का स्तर दिन पर दिन गिर रहा है किसी संस्था में डंडे के डर से तो काम करते हैं परन्तु कर्तव्य निष्ठा समाप्त हो रही है। रिश्वत का बोलबाला है यदि नैतिक मूल्यों में इसी प्रकार गिरावट होती रही, तो हमारी समाज में किसी की भी जान, माल वा इज़्जत सुरक्षित नहीं रहेगी।

वह धर्म, धर्म नहीं जिसमें नैतिक मूल्यों को अपनाया नहीं जाता। धर्म तो शुरू ही वहां से

होता जब हम परमात्मा को नहीं मनुष्य को मनुष्य समझकर उसके दुख दर्द को कम करते हैं।

देवात्मा ने धर्म की परिभाषा इस प्रकार दी है :- धर्म उच्च भावनाओं का नाम है, जैसे मीठे के बिना पकवान नहीं, उच्च भावनाओं के बिना धर्म वा नैतिकता नहीं।

चार नैतिक मूल्य अपनाने से धर्म आता है
श्रद्धा : किसी को अपने से बढ़िया देखना, उसकी तहदिल से महिमा मानी और उसके उस विषय के सम्बंध में अपने आपको हीन देखना जहां श्रद्धा है, वहां किसी की योग्यता वा बड़प्पन को देखकर ईर्ष्या नहीं होती।

कृतज्ञता : हम चारों जगत्तों से सेवाएं पाते हैं, उनको अपने ऊपर ऋण की न्याई अनुभव करना और उपकारियों के प्रति-उपकार करना, उन्हें किसी प्रकार का कष्ट वा दुख न देना। जहां कृतज्ञता है वहां नैतिकता है, धर्म है। वहां सच्चा स्वर्ग है।

हानि-परिशोध : किसी को हानि पहुंचाने, दुख देने पर उसके लिए पश्चाताप का क्षमा याचना और आगे से उससे बचने का भाव हानि परिशोध कहलाता है। मनुष्यात्मा दूसरों को हानि पहुंचाए बिना, वा दुख पहुंचाए बिना नहीं रह सकता, परन्तु उसको अनुभव करके उसका परिशोध करने से धर्म आता है। आपके अपराध कोई क्षमा नहीं कर सकता, चाहे कितना नाम जपो, केवल हानि प्राप्त जन से क्षमा मांगने पर ही क्षमा मिल सकती है।

दया : दूसरों के दुख को अपने दुख की तरह अनुभव करना और दूर करने के लिए अपने सुखों का त्याग करना दया का भाव कहलाता है। जहां दया है, वहां नैतिकता है, धर्म है।

उक्त भाव पैदा करके ही कोई जन नैतिक मूल्यों को अपना सकता है।

मनुष्य के भीतर पाश्विक अहिंसक, दुखदाई वा विनाशकारी भावनाएं हैं उनको नष्ट करना ही धर्म वा नैतिकता है। जहां नैतिकता नहीं, वहां

धर्म नहीं। पूजा, पाठ, नाम, जाप सब व्यर्थ है।

इससे भी आगे धर्म आता है, अपने आत्मा के ज्ञान प्राप्त करने से और आत्मा का कल्याण करने से उक्त मार्ग अपना कर ही आ सकता है।

सुरजीत बराड़

शराब और टूटते हुए परिवार

शराब पीना आज के युग का Status Symbol बन गया है। शराब के बिना कोई भी महफिल वा त्यौहार रूखा सूखा माना जाता है। Week End अब भारत में शराब का त्यौहार बन गया है। क्या पुरुष और क्या महिलाएं इस नशे में दिन पर दिन डूबते जा रहे हैं।

एक गरीब झोंपड़ी में रहने वाले वा रिक्शा चलाने वाले से लेकर लाखों, करोड़ों व अरबों पति शराब के प्याले में डूबते जा रहे हैं।

शराब से यदि एक व्यक्ति ही प्रभावित होता तो अलग बात थी, परन्तु इस नशे के शिकार होने से पारिवारिक जीवन नष्ट हो रहे हैं, बच्चों का भविष्य ताक पे रखा जा रहा है। शराब पीकर गलत हरकते करना, पति पत्नी में झगड़े पैसों और इज़्जत की बर्बादी प्रति दिन देखने और पढ़ने में आती है।

एक एक खाता पीता परिवार सुन्दर पति पत्नी प्यारे बच्चे जो एक परिवार के लिए वरदान होता है, वह केवल शराब के कारण बिखर जाते हैं। सम्बन्धियों की लाख कोशिशें निष्फल हो जाती हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त पत्नी को गंदे बोल और यहां तक कि हाथ उठाने तक का सामना करना पड़ता है। आखिर परिणाम क्या होता है। परिवार टूट जाता

है। परन्तु शराब नहीं छूटती। लड़कियां फिर भी मेहनत करके बच्चे पाल लेती हैं। परन्तु पिता के जिंदा होते हुए भी अनाथ रहना पड़ता है। शराब से एक एक जी की असमय मृत्यु हो जाती है।

एक और परिवार जिसमें सुख सुविधा के उतने साधन नहीं, आर्थिक तंगी भी है, परन्तु शराब पर प्रतिदिन खर्च होता जाता है, फिर लड़ाई झगड़े प्रतिदिन का क्रम बन जाता है। बच्चों की शिक्षा प्रभावित हो रही है। जिन बच्चों को स्वयं बाप ने सम्भाला था, वह बच्चे कभी प्यार से कभी डांट से शराब से हटाना चाहते हैं, परन्तु उनकी कोई पेश नहीं जाती। लगता है कि जल्दी ही वह घर भी टूट जाएगा।

हर रोज शराब पीना, इस अवस्था में पत्नी को दिल दुखाने वाले शब्द कहना, पत्नी के कुछ कहने पर उसे शारीरिक दण्ड देना, बच्चों के सामने उनकी मां का अपमान करना, बच्चों को प्यार और सुरक्षा देने के स्थान पर उनके भी अंदर असुरक्षा की भावना भर देना, चरित्रहीनता की उदाहरण बच्चों के सामने रखना, यह शराब के प्रयोग के आम परिणाम हैं।

मनोचिकित्सकों का यह विचार है कि अधिक शराब पीने वाले व्यक्तियों के भीतर कुछ

ऐसी विषमताएं होती हैं, जिनसे मुक्ति पाने के लिए मनुष्य शराब का सेवन शुरू कर देता है।

प्रारम्भिक अवस्था में तो शराब का नशा सुखदायक होता है, क्योंकि स्नायुप्रणाली पर इसका असर होने पर शराबी अपन आपको सब समस्याओं की चिंता से मुक्त पाता है, परन्तु ज्यों ज्यों वह नशा कम होता है, समस्याओं का सामना करने के वह और अयोग्य होता जाता है, इससे depression की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

शराब नोशी से यादाश्त कम होने लगती है। चिड़चिड़ा स्वभाव वा शक्की मिज़ाज हो जाता है। कोई महत्वपूर्ण कार्य करने की क्षमता समाप्त होने लगती है, न कोई लक्ष्य रहता है और न ही संकल्प।

अपने सम्बंधों में एक एक शराबी मनुष्य मुसीबत बन जाता है। बुरे शब्द बोलना, झूठ बोलना, शेखी मारना, मार घाड़ करना, अपने विवाहित सम्बंध में बेवफा होना आदि बुराईयां दिन पर दिन बढ़ने लगती हैं। पारिवारिक जीवन कष्ट पूर्ण बन जाता है परिवार की अवहेलना करना, शराब पीने के मामले किसी की न केवल ठीक राए न मानना, बल्कि उसके हक में दलीलें देने लगता है। यहां तक कि परिवार टूट जाता है, परन्तु उसे अपनी और अपने परिवार की तबाही मंजूर है, परन्तु शराब छोड़ना नहीं। शराब पिलाने वाले मित्र और अपने हितकारी शत्रु नजर आते हैं।

शराब पीने से उत्पन्न विवेकहीनता उसे आत्म विश्लेषण ही नहीं करने देती। धीरे धीरे आत्म बल खाता होने लगता है, फिर चाहकर भी अपनी तबाही से नहीं बच सकता।

सबसे बढ़कर एक एक शराबी की बुराई का

शिकार उसके माता पिता पत्नि वा बच्चे होते हैं। एक एक शराबी क पाश्विक व्यवहार से तंग आकर एक एक स्त्री आत्म हत्या कर लेती है। जालंधर जिले के एक सर्वेक्षण के अनुसार शराब पीकर 60 प्रतिशत पति पत्नियों को अमानवीय कष्ट देते हैं। साधारणतः सुबह नशा उतरने पर एक एक शराबी शर्मिदा भी महसूस करता है, क्षमा भी मांगता है और आगे से ऐसा व्यवहार न करने का वायदा भी करता है, परन्तु रात होते ही वह वायदे काफूर हो जाते हैं।

नशे की विशेषकर शराब की आदत सभ्य समाज का अंग बनती जा रही हैं। कोई भी त्यौहार अब इसके बिना अधूरा माना जाता है। यही कारण है कि परिवारों में जहन्नुम बढ़ता जा रहा है।

इस लत के कारण अच्छी अच्छी योग्यताएं नष्ट हो रही हैं। यह ठीक है, प्रत्येक शराब पीने वाला इस सीमा तक विनाश की डगर की ओर नहीं बढ़ता, परन्तु मनुष्य सुख अनुरागी है, एक एक सुख के बढ़ते पता ही नहीं चलता, कब वह पूर्ण विनाश की ओर ले जाता है।

अवश्यकता इस बात की है कि समय रहते इस कमजोरी पर काबू पर लिया जाए। पू० भगवान देवात्मा की रोशनी में एक एक घोर शराबी ने अपनी इस अवस्था को देखा है और उनका बल पाकर सारी उमर के लिए शराब वा अन्य नशों को लगाया है। शराब के कारण उजड़ते हुए एक एक परिवार को बचाया है, और उस परिवार की काया कल्प हुई है। जिनके लिए भी सम्भव हो उनकी ज्योति शक्ति पाकर इस महां भयानक बुराई से निकलने का मार्ग मिल सकता है। काश! देवात्मा की ऐसी ज्योति शक्ति फैले और मनुष्य मात्र का इस बुराई से उद्धार हो सके।

सुरजीत बराड़

रोशन होंगे नए चिराग

मंगल पर उतरेंगे

मंगल मिशन : 2004 में पूरी दुनिया एक बार फिर मंगल ग्रह के 'लाल जादू' की गिरफ्त में आती दिख रही है। पिछली बार 27 अगस्त को ऐसा हुआ था जब लोगों ने नंगी आंखों से मंगल ग्रह के दुर्लभ दर्शन किए थे। इस बार मौका है नासा के दो रोबो जियोलॉजिस्ट रोवर 'मार्स एक्सप्लोरेशन रोवर्स' एमईआर-ए आर एमईआर-बी के मंगल की सतह पर लैंड करने का। ये दोनों रोवर्स इसी हफ्ते मंगल की सतह पर उतर रहे हैं। ये दोनों रोबो जियोलॉजिस्ट मंगल की धरती के नीचे पानी या बर्फ के भंडार का पता लगाने के साथ ही इस बात की जांच भी करेंगे कि क्या कभी मंगल पर जीवन था? और यदि था तो वह समाप्त क्यों हो गया?

कागज पर छपेगी बैटरी

जैसे जैसे मोबाइल और लैपटॉप ज्यादा शक्तिशाली और छोटे छोटे होते जा रहे हैं वैसे ही इनके लिए अतिविकसित बैटरी की जरूरत महसूस होने लगी। एक ऐसी बैटरी जो न केवल हल्की और छोटी हो बल्कि काम में तेज और लंबे समय तक चलने वाली हो। दस साल बाद वैज्ञानिकों को इस क्षेत्र में सफलता मिली है। यह सफलता मिली 2003 में है लेकिन इसका लाभ 2004 में ही मिलना शुरू होगा। एक रिपोर्ट के मुताबिक एमआईटी के भौतिक विज्ञानी प्रो. डोनाल्ड से डोवे ने पॉलीमर की शीट जैसी एक लचीली बैटरी बनाने में सफलता पा ली

है। कागज से भी पतली यह बैटरी परंपरागत लीथियम ऑयन बैटरी से 4 गुना ज्यादा शक्तिशाली है। इस बैटरी को कागज की तरह ही मोड़ा जा सकता है। सैडोवे के विचार में कलाई घड़ी, लैपटॉप, मोबाइल या कार किसी में भी यह बैटरी आसानी से काम कर सकेगी। बैटरी की छपाई कागज की प्रिंटिंग की तरह की जा सकेगी। एक चौंकाने वाली जानकारी यह भी है कि बैटरी जैसी जरूरत के लिए अब आई वस्त्र भी बाजार में आने वाले हैं। फिलिप्स और आईवीएम इस दिशा में प्रयत्नशील हैं।

दिल के सुराख को बंद करेगी बैंडेज

इमरजेंसी वार्ड, आईसीयू या ट्रॉमा सेंटर्स में चिकित्सक और मरीज के परिजन दोनों ही गहरे तनाव में होते हैं, क्योंकि यहां हर पल जीवन और मौत का संघर्ष चल रहा होता है और एक एक सैंकेंड की देरी की कीमत मरीज को कई बार अपनी जान से चुकानी पड़ती है। इन स्थितियों में स्टेटस्कैन मरीजों के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है। गंभीर दुर्घटनाओं या युद्ध के मैदान में ज्यादातर मौतें अत्यधिक रक्त बह जाने से होती हैं, लेकिन अब इस समस्या पर काबू पा लिया है हेम कॉन बैंडेज ने। अंदरूनी घावों या अन्य समस्याओं की जांच के लिए एक ऐसे इलेक्ट्रॉनिक कैप्सूल का अविष्कार किया गया है जिसे एक रिमोट कंट्रोल की मदद से डाक्टर शरीर के किसी भी अंदरूनी हिस्से में भेज सकता है। एक खास बात आने वाले समय में चिकित्सा जगत में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाली इन सभी चीजों

का वर्ष 2004 में व्यवसायिक प्रयोग शुरू होने जा रहा है। कैट स्कैन और एम आर आई के बाद इसी श्रृंखला की सर्वथा नई और इन सबसे कहीं अधिक प्रभावी टैक्नोलॉजी स्टेटस्कैन 2004 में आपके शहर के अस्पतालों में उपलब्ध होगी। आपात स्थितियों में जबकि गोलियों से छलनी या दुर्घटना में बुरी तरह घायल शरीर चिकित्सकों के सामने आता है तो सबसे पहले यह जानने की कोशिश का जी जाती है कि कौन कौन सा अंग क्षतिग्रस्त हो चुका है। ऐसे समय में जबकि मरीज के लिए एक एक क्षण बेशकीमती होता है, यही प्रक्रिया सबसे ज्यादा समय लेने वाली साबित होती है। अब तक डॉक्टर इसके लिए पूरे शरीर का अलग अलग कोणों से एक्स रे लेते थे और एक्स रे प्लेटों की प्रोसेसिंग और रिपोर्ट आने के बाद ही असली इलाज शुरू होता था। स्टेटस्कैन ने इस पूरे परिदृश्य को बदल दिया है। गंभीर रूप से घायल मरीज को सीधे स्टेटस्कैन मशीन पर लिटा दिया जाता है। और यह मशीन बेहद कम क्षमता वाली एक्स रे और विभिन्न कोणों पर लगे 12 डिजिटल सीसीडी कैमरों की सहायता से मरीज के शरीर की सिर से लेकर पैर के अंगूठे तक की आंतरिक छवि मात्र 13 सैकंड में मॉनीटर पर प्रस्तुत कर देती है। इतना ही नहीं बल्कि यह मशीन इसी दौरान यह भी विश्लेषण करके बता देती है कि मरीज को कहां कहां गंभीर चोट लगी है और उसके जीवन को बचाने की कितनी संभावना है। स्टेटस्कैन का आविष्कार अमेरिका के हरमन पोटजीटर ने हीरे की खानों में काम करने वाले श्रमिकों को ड्यूटी से घर जाते समय स्कैन करने के लिए किया था, ताकि यह पता लगाया जा

सके कि कहीं कोई हीरे की चोरी तो नहीं कर रहा है। वर्ष 2003 में इस मशीन को चिकित्सीय प्रयोगों के लिए अपग्रेड किया गया और वर्तमान में अमेरिका में मैरीलैंड के आर एडम्स काउले शॉक ट्रुमा सेंटर में इसका परिक्षण जारी है। अब तक के सभी परीक्षणों में यह मशीन अत्यधिक उपयोगी साबित हुई है और सबसे खास बता है कि इस मशीन में आम एक्स रे मशीनों की तुलना में 75 प्रतिशत कम विकिरण से रोगी की जांच की जाती है। 2004 में स्टेटस्कैन का व्यावसायिक उत्पादन शुरू होने जा रहा है। और दुनियाभर के अस्पतालों के आपातकक्षों में अब आपको स्टेटस्कैन मशीन नजर आएगी।

वाल्वो रखेगी खुद अपना ख्याल

अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी से युक्त ऐसी कारों की पूरी श्रृंखला अगले वर्ष बाजार में प्रवेश करने के लिए तैयार है, जो अपना ख्याल खुद रखेंगी। इसी श्रृंखला की अगली कड़ी है वोल्वो कंपनी की दो कारें 2004 एस 60 आर और 2004 वी 70 आर। ये हाई टेक कारें ड्राइविंग के दौरान कार के फिसलने, अधिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए स्टीयरिंग के एंगिल को घटाने बढ़ाने, कार की गति कितनी बढ़े और कितनी घटे इस पर नियंत्रण रखती हैं। वोल्वो की इन कारों में एक प्रोसेसर लगा हुआ है जो यात्रा के दौरान विभिन्न डाटा एकत्रित कर उनका विश्लेषण करता रहता है। और कार की आटोमैटिक नियंत्रण व्यवस्था इस विश्लेषण के अनुसार कार को नियंत्रित रखती है।

रेडियो चलाएगा इंटरनेट

अमेरिका के शहर कार्डिफ के लोग वर्ष 2004 में सर्वप्रथम मॅश रेडियो के नाम से जाना

जाने वाला अत्यधिक क्षमतावान वायरलेस नेटवर्क का प्रयोग करेंगे। इसके जरिए वे अपनी पसंद से चुनी गई फिल्म अपने वीडियो सेट पर देख सकेंगे। पड़ोसियों से वीडियो चैट कर सकेंगे। इंटरनेट की जानकारीयां बेहद तेजी से डाउनलोड करना मॅश रेडियो की एक खूबी होगी। इसके शोधकर्ताओं का दावा है कि एक साथ कई लोगों के प्रयोग के बावजूद यह इंटरनेट सुविधाओं की तरह मंद रफ्तार नहीं होगी। कार्डिफ में यह सुविधा मल्टीप्लॉइंट वीडियो डिस्ट्रीब्यूशन सर्विस दे रहा है जो केबल रहित होगी यानि बेस स्टेशन और उपभोक्ता के बीच संपर्क सौ फीसदी रहेगा। यह तकनीक कैम्ब्रिज के रेडियेन्ट नेटवर्क्स ने विकसित की है।

हवा में तैरेगा स्क्रीन और की-बोर्ड

वर्ष 2004 में न्यूयार्क के लोग ऐसे पायटाप की सुविधा ले पाएंगे, जिनका स्क्रीन और की-बोर्ड

हवा में तैरता दिखाई देगा। अमेरिका की एक कम्पनी होलोटच इंक ने इसके ब्रिआयामी की-बोर्ड की छवि तैयार की है जिसे होलोग्राफिक की-बोर्ड कहते हैं यह हवा में तैरता दिखाई देगा। इसमें आम की बोर्ड की तरह व्यक्ति टाईपिंग कर सकता है जिसका इनपुट पायटाप में वायरलेस तकनीक के द्वारा पहुंचेगी। 'इनोवेसंस इंक' नाम की कंपनी ने पायटाप की छोटी स्क्रीन की रोटोब्यू सिद्धांत पर एक बड़ी इमेज केस में दिखाने में सफलता पाई है। इस प्रक्रिया में जैसे ही पायटाप घुमाते हैं चोटी स्क्रीन पर दिखने वाली सारी चीजें हवा में एक बड़ी वर्चुअल इमेज के रूप दिखाई देंगी। कहना न होगा कि अब हथेली बराबर कम्प्यूटर का उपयोग महाकाय कम्प्यूटर की तरह होगा।

पापा की सीख

दादी हमारे साथ ही रहती हैं। पापा दादी की बहुत देखभाल करते हैं, इसके विपरीत मेरे चाचा चाची दादी को साथ रखना भी पसंद नहीं करते। मैं और मेरा भाई दादी की आदतों से बहुत परेशान रहते। किसी न किसी बात पर हम दादी पर नाराज होते और उन्हें कोसते रहते। उनके सामने तक उल्टा सीधा बोलने में नहीं चूकते थे। मेरी इस चिड़चिड़ाहट को मैंने एक पत्र में लिखा। उसका उत्तर देते हुए पापा ने लिखा-बच्चों तुम्हारी दादी

मेरी मां है। जिस तरह तुम अपनी मां से प्यार करते हो उसी तरह मैं अपनी मां को सम्मान करता हूँ और इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम भी उनसे प्यार करो और इज्जत करो। मां न होती, तो दुनियां न होती। वृद्धावस्था ऐसी अवस्था है जिसमें से सभी को गुजरना पड़ता है। जो जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करना सीखो। दादी की सेवा करो। बुजुर्गों का आशीर्वाद ही हमारे भविष्य को सुरक्षित बनाता है। पापा के पत्र ने हमारी आंखें खोल दी।

लक्ष्य बनाएं, अपनी छाप छोड़ें

ऐसा क्यों होता है कि अधिकांश लोग अपने जीवन के लेखे जोखे में कुछ खास नहीं जोड़ पाते। न ऐसा कुछ कि उन्हें देखते ही कहा जाए कि क्या शरूब है, न ऐसा कि पीठ पीछे भी उनके कामों की तारीफ हों यह ज़िंदगी है! तो जीना ही पड़ेगा की सोच ने अधिकांश लोगों को सामान्य बना रखा है। होना तो यह चाहिए कि व्यक्ति को उसके कामों से जीवन में और बाद में भी याद किया जाए, पर यह बात उन्हीं पर लागू होती है जो ज़िंदगी को अलग नज़रिये से देखते हैं, जीते हैं या जीना चाहते हैं। ज़िंदगी से शिकायत नहीं करते, बल्कि उसके एक एक क्षण का आनंद लेते हैं दूसरों को भी देते हैं।

यदि आपका नज़रिया अपनी अमिट छाप छोड़ने का है, तो आपको बिना एक क्षण भी गंवाए कुछ ऐसा एक्शन प्लान तैयार करना होगा जिसमें अतीत के अनुभव (यदि हों तो) को शामिल करते हुए तय करना होगा कि सबसे पहले तो आप क्या हासिल करना चाहते हैं? यह तय करने के बाद कि आपका लक्ष्य क्या है, आप यह तय करें कि आप अपने लक्ष्य को किस तरह हासिल करना चाहते हैं? जब लक्ष्य प्राप्त करने का मार्ग भी आप तय कर लें, तो साथ ही यह भी तय कर लें कि कितने समय में लक्ष्य हासिल करना चाहते हैं? इन बिंदुओं के अलावा एक बिंदु और भी तय कर सकते हैं। वर्तमान लक्ष्य को हासिल करने के बाद आप फिर से एक नया और बड़ा लक्ष्य तय कर इसी प्रक्रिया की पुनरावृत्ति करेंगे? अब लक्ष्य हासिल करने की दिशा में जो सबसे पहली चीज है वह यह है कि आपके मन के भीतर कितना आत्मविश्वास है? माना जाता है कि इंसान की सबसे बड़ी पूंजी उसका दिमाग और उसके भीतर चल रहा आत्मविश्वास ही है, क्योंकि चाहे दौलत हासिल करनी हो अथवा किसी रचना का सृजन करना हो, इन सबकी मूलभूत आवश्यकता इनसानी दिमाग है। इंसानी दिमाग ने ही पिछले पचास साल में तरक्की के वे सारे आयाम, वे सारे प्रतिमान तोड़

डाले, जो उसने पिछले सैंकड़ों वर्षों में भी हासिल नहीं किए थे। और इस दिमाग की सबसे बड़ी अहमियत इंसान के भीतर जन्म लेता आत्मविश्वास है। मान लीजिए आप पहले दूसरे या तीसरे दौर में वैज्ञानिक परीक्षण करते हुए नाकाम भी रहते हैं, तो भी पिछले अनुभवों से सबक सीखते हुए एक दिन आप जरूर सफल होकर रहेंगे। यही बात उद्योग, व्यापार, मार्केटिंग, अपने आइडिया बेचने तक हर जगह लागू होती है।

एक सर्वे के अनुसार सफल होने वाले व्यक्तियों का प्रतिशत नाकाम होने वाले लोगों की अपेक्षा मात्र एक फीसदी या उससे भी कम होता है, किंतु यह एक फीसदी लोग ही दुनिया को चलाने, अपनी छाप छोड़ने या एक नई पहल करने में सफल हो पाते हैं। आप स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं कि सौ करोड़ की, आबादी का आंकड़ा पार कर चुके भारत में क्या सफल लोगों की संख्या आबादी का एक प्रतिशत अर्थात् एक करोड़ है? हम यहां कोई टिप्पणी किए बिना आप पर छोड़ देते हैं और आप ही तय कीजिए कि हमारे देश में अपनी छाप छोड़ने वाले लोगों की संख्या कितनी है? बहरहाल आंकड़ेबाजी के जाल से बाहर आते हुए उस विषय को पुनः छूने का प्रयास करें, जिससे हमने अपनी चर्चा की शुरुआत की है। आप जो भी हासिल करना चाहते हैं, निश्चित रूप से वह आपको पसंदीदा विषय या लक्ष्य तो होना ही चाहिए। आप उसे किस तरह हासिल करना चाहते, इसके लिए कुछ लोगों, कुछ संस्थाओं या हो सकता है कुछ काउंसलरों की जरूरत पड़े, किंतु इन लोगों में से सर्वश्रेष्ठ चयन करके आप लक्ष्य हासिल करने के अंतराल को काफी हद तक घटा सकते हैं। समय आपके हाथ में है, इसे जाने न दें। आप अपनी रफ्तार, समय की रफ्तार से भी तेज कर दें, सफलता तो आपके कदम चूमेगी ही।

(महेश शर्मा)

शुभ संग्राम

योल कैंट : 23 मार्च को श्रीमान बलदेव सिंह जी, डाक्टर विनोद खेड़ा के साथ यहां पहुंचे। रात को एक सभा दोनों डोगरा परिवारों को लेकर की गई। इस सभा में देवात्मा के लासानी आविर्भाव, उनके सर्वोच्च और परम महान रूप पर रोशनी डाली गई। उनके देव असरों से चारों जगतों का कल्याण जुड़ा हुआ है। यह देव असर हमारा ध्यान हमारे अपनी तरफ डालते हैं। हमारी नीचताओं और कमियों को दिखाते हैं। यदि हमारी नीचताएं हमें दिखाई नहीं देती तो प्रभाव नहीं मिलते। देव प्रभावों को प्राप्त करने के लिए साधन, पाठ वा सत्संग करते रहना अति आवश्यक है।

24 तारीख को सुबह की सभा में बताया गया कि जीवन तत्व क्या होता है? जीवन तत्व आत्मा सम्बंधी 2 सचाईयों की उपलब्धि है।

1. मनुष्य को उसके भाव चलाते हैं।
2. मनुष्यात्मा सदा परिवर्तित होता रहता है।

अपने भावों को जानने की इच्छा नहीं और न ही अपने आप वह नज़र आते हैं। प्रत्येक सुख अनुरागी नीच गतियां करता है और अपनी हानि करता है। अपने परिवर्तन को देखना, नीच भावों से निकलना और उच्च भाव पैदा करने के फिकर और संग्राम के बिना जीवन नाश हो जाता है।

रात को फिर एक सभा की गई, जिसमें अंधकार की हानियां बताई गईं। रूहानी अंधकार

सबसे हानिकारक है। अंधकार में दोस्त और दुश्मन में अंतर नज़र नहीं आता। अपना लक्ष्य नज़र नहीं आता। अपना गलत अंदाज़ा अंधकार के कारण ही मनुष्य लगाता है। अमीर होता होता विनाश के गढ़े में गिर जाता है, जेलें भुगतता है। हार्ट फेल हो जाता है। 25 मार्च की सभा में गुरु महाराज के मिलने के सौभाग्य के विषय में बताया गया, परन्तु हम उस सौभाग्य की सफलता 1 प्रतिशत भी नहीं करते। गुरु को पहचानते भी नहीं। इसके लिए प्रतिदिन साधन की अवश्यकता है। अपने विरुद्ध सुनने की आदत डालनी चाहिए। सभापति जी ने हाजरीन से उनकी कमियों के विषय में पूछा। 400 रुपये चंदा अखबर व दान प्राप्त हुआ, दुबारा आने के लिए वहां के जनों ने प्रार्थना की।

लांझनी :- यहां परषोत्तम जी के घर सभा की गई, जिसमें बताया गया कि देवात्मा की रोशनी के बिना अपनी नीचता की ओर ध्यान नहीं जाता। स्वार्थ भाव से जुड़कर नर्क और उच्च भावों से जुड़कर स्वर्ग पैदा होता है।

26 तारीख को सभा में बताया गया ईलाज का सम्बंध शारीरिक रोगों के साथ है। धर्म का सम्बंध आत्मा के ईलाज से है। नीच भाव आत्मा के रोग हैं। उच्च भाव आत्मा की सेहत है। देवात्मा यह सर्वोच्च काम कर रहे हैं।

पब्लिक सभा :- यहां महिला मंडल और युवक क्लब का समागम चल रहा था। वहां बहुत गिनती

में पढ़े लिखे लोग इकट्ठे थे। उनको सम्बोधन किया गया। वहां बताया गया कि जो मनुष्य भरोसे योग्य नहीं, वह धर्मवान नहीं। बुरी संगत की हानियां बताई गईं। यहां समाज का साहित्य बांटने का फैसला किया गया। परपोतम जी ने भी उन्हें सम्बोधन किया। प्रोग्राम काफी प्रभावशाली रहा।

यहां 500 रुपये दान में मिले। धर्मशाला पहुंच कर भी एक सभा की गई, जिसमें विकास क्रम के बारे में बताया गया। विकास का साथी बनकर ही मनुष्य विकास पा सकता है।

27 तारीख की सुबह एक सभा की गई। सभा में बताया गया कि अपने जीवन की सफलता के लिए मनुष्य महान व्यक्तियों पर निर्भर करता है। अपने आप संग्राम करके भी मनुष्य अपने मिथ्या और पाप को नहीं देख सकता। नेचर में निर्भरता का नियम है। बेजान जगत, पशु वा पौधे अपने विकास के लिए मनुष्य पर निर्भर हैं। चारों जगतों के हित सम्पादन के लिए नेचर ने देवात्मा को प्रगट किया है। मनुष्य अपनी आत्मिक सुरक्षा के लिए देवात्मा के अद्वितीय देव प्रभावों पर निर्भर करता है। यहां डोगरा परिवार ने 500 रुपये चंदा अखबार वा दान आदि दिए। इसके बाद धर्म सम्बन्धी चण्डीगढ़ वापिस आ गए।

10 तारीख की शाम श्रीमान बलदेव सिंह जी संगरूर पहुंच गए। सुखदेव जी भी वहां पर पहुंच गए।

रात को 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें बताया गया कि मनुष्य सुखपरायण है व पाप परायण है। सुखों के पीछे दौड़ता दौड़ता दुःखों में फंस जाता है। उसे अपनी नीच शक्तियों का ज्ञान

नहीं है। जो उसे नीच दुःखों में फंसाती है व उसके बर्बादी का कारण बनती है। मनुष्य के नीच भावों के आगे उसकी मानसिक शक्तियों की पेश भी नहीं चलती। कितने ही जन यह जानते हुए भी कि हमारी अमुक अमुक नीच शक्तियां हमारे परिवार को उजाड़ रही हैं व हमारे मान सम्मान को हानि पहुंचा रही हैं व हमारे लिए बर्बादी ला रही है फिर भी मनुष्य जानते हुए भी उससे खुद निकल नहीं सकता। शरीर को हानि कौन से भाव पहुंचाते हैं। उसका वर्णन किया गया। हमारी नीच रुचियां कैसे हमें नचाती रहती हैं उसका हमें पता ही नहीं लगता। अगर उसके किसी भयानक पहलु का पता लग भी जाए तो उसे हम चाहकर भी छोड़ नहीं सकते। आज हमारे परिवारों में नरक क्यों छाया हुआ है। हमारा समाज इस तरह पतन की ओर क्यों जा रहा है, उसका मुख्य कारण मनुष्य के नीच भाव हैं। मनुष्य की नीच शक्तियां ही उसको व समाज को विनाश के रास्ते पर लाकर खड़ा कर देती हैं। स्वार्थ, नीच घृणा, घमण्ड आदि भावों से चारों तरफ हाहाकार मची हुई है। मनुष्य का जीवन क्या, उसके नियम क्या, उसके बारे में पता नहीं है। ऐसी पतन की हालत में नेचर के विकास के क्रम में उसके अपने ही नियमानुसार देवात्मा का आविर्भाव हुआ है। जो नीच भावों को कुचलते हैं व उच्च भाव पैदा करते हैं। जिससे अधिकारी मनुष्य का धर्म की दुनिया में वास होता है। गुरु महाराज के देवप्रभावों द्वारा लोगों के अंदर आए शानदार परिवर्तन के बारे में उदाहरणों सहित बताया गया।

11 अप्रैल 2004 सुबह 8:30 बजे एक सभा की गई। मनुष्य ने अंधकार में रहकर हमेशा ध

लेखा खाया है, हानि उठाई है व विनाश को प्राप्त हुआ है। अंधकार चाहे भौतिक हो, चाहे मानसिक मनुष्य के लिए हानिकारक है। उदाहरणों द्वारा इस सच्चाई का ब्यान किया गया। सात्विक रोशनी के न होने से जो अंधकार है उससे भी बहुत ज्यादा हानि हो रही है। इस रोशनी के न होने से मनुष्य इतना अंधा है कि उसको दूसरे के गुण दिखाई नहीं देते, दूसरों के उपकार व दूसरों का दुःख दर्द दिखाई नहीं देता। जिसके कारण मनुष्य दुःखी है व इस दुनिया में नरक छाया हुआ है। इस दुनिया में बहुत कम गिनती के लोग हैं जो सात्विक रोशनी रखते हैं। सात्विक रोशनी से भी कहीं गुणा ऊपर देव ज्योति होती है जो सिर्फ व सिर्फ देवात्मा में ही पैदा हुई है। इस रोशनी से पहले आत्मा का सत्य ज्ञान असम्भव था। देव शक्तियों से पैदा हुई इस देवज्येति से आत्मा का सत्य ज्ञान व बोध का पता चलता है। देवात्मा की शिक्षा विज्ञानमूलक है। देवज्योति आत्मा का अधेरा दूर करती है। आत्मा के असल रूप को दिखाती है। उनकी शक्तियों का ज्ञान देती है। भगवान देवात्मा के देवप्रभावों के बिना इस दुनिया से आत्मिक अंधेरा दूर नहीं हो सकता। वह अध्यात्मिक दुनिया के सूरज हैं। नीच शक्तियों को कुचलकर उच्च भाव विकसित करते हैं। ऐसे धर्म के सूरज को पहचानना, उनके देवप्रभावों को पाकर आत्मिक सत्य ज्ञान पाना व धर्म की दुनिया में जीना हमारा परम सौभाग्य है। भगवान देवात्मा के देवप्रभाव किस प्रकार अधिकारी आत्मों में आत्मा के अंधकार को दूर करके धर्म की दुनिया में प्रवेश कराते हैं उसके उदाहरण पेश किए गए। हाजरीन पर अच्छा असर पड़ रहा था।

11 अप्रैल 2004 रात 8:30 बजे एक सभा की गई। इस सभा में बताया गया कि इस दुनिया के दो रूप हैं। स्थूल व सूक्ष्म। सूक्ष्म दुनिया को समझना बहुत जरूरी है। इस दुनिया में असरों का खेल जारी है। हम मनुष्यात्मा नीच असरों में रहकर नीच बनते हैं। नीच असरों से हम अपने लक्ष्य से भ्रष्ट हो जाते हैं, नौजवान लड़के खराब हो जाते हैं नीच संगत के कारण। दो चीजों पर हमारा अस्तित्व निर्भर करता है। विरासत और वातावरण। हमारे चारों तरफ का वातावरण नीच असरों के कारण इतना खराब है कि हम पतन के रास्ते के मुसाफिर बनते हैं। जिस प्रकार आग के असर, जहरीली हवा के असर हमें दिखाई नहीं देते परन्तु भयानक नतीजे पैदा होते हैं, उसी प्रकार मनुष्य नीच असरों न देखते हुए भयानक फलों का शिकार हो जात है। नीच असरों में रहकर मनुष्य उच्च असरों की कीमत भी भूल जाता है। नीच असर किस प्रकार एक एक भले इंसान को भी तबाह कर देते हैं उनका वर्णन उदाहरणों सहित दिया गया। असर हमारा लक्ष्य बदल कर रख देते हैं। नीच असरों में रहकर मनुष्य का पतन होना लाजमी है। भगवान देवात्मा के देवअसर एक नई किस्म की जाति है। उनके देवअसरों से अधिकारी मनुष्यों के अंदर एक नई क्रान्ति आई है। देवअसरों में वह योग्यता है कि जिससे हमारा नीच जीवन कट सकता है व उच्च भाव पैदा हो सकते हैं। देवअसरों में ही हमें भले व बुरे असरों की सही पहचान होती है। देवअसरों में ही हमें हमारे मुख्य लक्ष्य का पता चलता है। देवअसरों में ही देवात्मा के रूप का हमें कुछ पता लग सकता है। हम ऐसे देवगुरु के देवअसरों को ज्यादा से

ज्यादा समझ सकें व उनको ग्रहण करके जीवन का सही अर्थ समझ सकें।

12 मई 2004 सुबह 8:30 बजे एक सभा की गई। इस सभा में बताया गया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आविर्भाव मनुष्य के लिए अथाह हितकर है परन्तु मनुष्य को अभी तक इस की समझ नहीं है। मनुष्य के लिए गुरु महाराज को समझना बहुत मुश्किल है। जो जन सेवक नहीं उनको तो समझ आ भी क्या सकती है। परन्तु जो जन सेवक है, कर्मचारी है, उनके लिए भी देवात्मा को समझना बहुत ज्यादा मुश्किल है। सात्विक जीवन धारी को समझना मनुष्य के लिए आसान है। एक जन गुरु महाराज को डाकुओं का सरदार समझते थे। गुरु महाराज की दुनिया इतनी ऊँची है कि उनको पूर्ण रूप से समझना मनुष्य के लिए असम्भव है। गुरु महाराज ने देव शक्तियों में विकसित होकर नई सच्चाईयां पेश की हैं। गुरु महाराज ने फरमाया है कि मनुष्य को उसकी शक्तियां चलाती है। भगवान देवात्मा किस प्रकार मनुष्य की हानिकारक शक्तियों को दिखाकर उन्हें उनसे निकालते है। उदाहरणों सहित इसका वर्णन किया गया। अपने से आला बेहतर विद्वान से जुड़ना हमारा सौभाग्य है। अपने से ज्यादा योग्य जनों से जुड़ने से लाभ ही लाभ है। उन लोगों के उदाहरण पेश किए गए कि जो जन अपने से योग्य विशुद्ध परोपकारी लोगों से जुड़ते हैं उसके बहुत बड़े सौभाग्य हैं। उनके जीवन से भी परोपकार निकलना शुरू हो जाता है। धर्म की दुनिया में वास हो जाता है। भगवान देवात्मा की दुनिया मनुष्य से बिल्कुल निराली है। वह नेचर के विकास में अद्वितीय शक्तियां लेकर पैदा हुए हैं।

उनसे जुड़ना बहुत मुश्किल है। परन्तु जो जन उनसे जुड़ते हैं उनकी दुनिया बिल्कुल निराली हो जाती है। उनके साथ जुड़कर आत्मा का सत्यज्ञान पाने का अधिकारी हो जाता है। अपनी मर रही आत्मा को बचाना उसका लक्ष्य बन जाता है। उन महानआत्माओं के उदाहरण पेश किए गए जिन्होंने किसी अंश भगवान देवात्मा के साथ सम्बंध स्थापन किया। भगवान देवात्मा के साथ जुड़ने से अपने जीवन की सही कदर मालूम होती है। उन जनों के सौभाग्य की कोई सीमा नहीं जो भगवान देवात्मा के साथ थोड़ा बहुत सम्बंध महसूस करते हैं। हम ऐसे देवगुरु के अद्वितीय देवरूप को उनकी रोशनी में ज्यादा से ज्यादा समझ सकें व अपने आत्मा का सच्चा ज्ञान व बोध पा सकें।

12 अप्रैल 2004 रात को 8:30 बजे एक सभा की गई। इसके सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। इस सभा में बताया गया कि भगवान देवात्मा के बिना हमारे जीवन का कोई ठिकाना नहीं है। इस बात का हमें कोई ज्ञान नहीं है व न ही कोई संग्राम है। हमें इसका अर्थ अच्छी तरह समझना चाहिए कि भगवान देवात्मा के बिना हमारा कहां ठिकाना है। हमारे भीतर हमारे शत्रु हैं उनको समझना जरूरी है। उदाहरणों सहित इस सच्चाई का ब्यान किया गया। जीवन ज्योति हमारे नीच भावों को दिखाती है। उनका भयानक रूप नजर आता है। जीवन नीच भावों से सुरक्षित होकर चलने का नाम है। नीच भाव हमारे अंदर अधेरा पैदा करते हैं। नीच भावों के गुलाम होकर हम अपने हितकारियों व उपकारियों को दुश्मन समझने लगते हैं। हमारे अंदर के शत्रु हमें खींचकर अपने उपकारियों व हितकारियों

से किस प्रकार दूर करते हैं उचित उदाहरणों द्वारा इस सच्चाई का ब्यान किया गया। काम अनुराग नशा अनुराग, स्वार्थ, ईर्ष्या द्वारा हमारे जीवन का नाश होता है। ऐसे नीच भाव रखकर जीवन जीना कोई जीवन नहीं है। ऐसे भावों से हम अपना व दूसरों का नुकसान करते हैं। श्रद्धेय कनल जी के जीवन के बारे में फरमाया गया कि जीवन क्या है इसका पता उनके जीवन से मिलता है। उनके जीवन का स्तर अपने आप में एक विशेषता रखता है। भगवान देवात्मा के देवरूप का level इतना ऊंचा है कि मनुष्य उसको नहीं पहचानता है। भगवान देवात्मा ने मनुष्य के स्वभाव के असल रूप को अपनी ज्योति में देखा है। उनके भयानक रूप को मनुष्य को दिखाया है। हम अपनी अबोधता के कारण जीवन के नियमों को नहीं समझते। कहाँ हमारे जीवन का सही ठिकाना है इसका सही उत्तर हमारे नीच भाव जानने ही नहीं देते। हम अपने नीच भावों में इतने संतुष्ट हैं कि उनकी तृप्ति के भिन्न हमें कोई और बात सूझती ही नहीं। भगवान देवात्मा की रोशनी हमें दिखाती है कि उनके देवप्रभावों के बिना हमारे जीवन का कोई ठिकाना नहीं। उनके देवप्रभावों को पाकर किस प्रकार अधिकारी आत्माओं ने अपने जीवन के स्तर को उपर उठाया है। एक अलग दुनिया है। भगवान देवात्मा ने किस प्रकार अधिकारी आत्माओं में उच्च परिवर्तन पैदा किया है उनके उदाहरण पेश किए गए। ऐसे देवगुरु के प्रभावों को ज्यादा से ज्यादा समझ सकें व लाभ उठा सकें।

13 अप्रैल 2004 सुबह 8:30 बजे एक सभा की गई। इसके सभापति श्रीमान बलदेव सिंह

जी थे। इसमें बताया गया कि मनुष्य ज्ञान रखकर भी अगर उस ज्ञान को अपने जीवन में लागू नहीं कर सकता तो उस ज्ञान का कोई फायदा नहीं। उच्च ज्ञान को अमल में लाने से उसका लाभ होता है। यही सच्चाई धर्म की दुनिया में भी लागू होती है। धर्म किसी मन्दिर, गुरुद्वारे में सिर्फ आने जाने से नहीं मिलता। धर्म उच्च भावों का नाम है। उच्च भावों को पैदा करने से धर्म आएगा। सिर्फ उसकी परिभाषा जानने से भी धर्म नहीं आएगा। हमें यह जानने की नितांत आवश्यकता है कि परोपकारी लोगों के अंदर क्या चीज है, जो उनको सारी उम्र दूसरों के लिए जीने को मजबूर करती है। हम यह जानते हुए भी कि उच्च भावों का नाम धर्म है परन्तु धर्म पाने के लिए न तो कोई इच्छा है, न उसके लिए संग्राम करते हैं। उच्च भावों के नाम बताए गए कि जिनके द्वारा धर्म आता है। ईमानदारी, पवित्रता के बिना धर्म शुरू नहीं होता। धर्मवान बनने के लिए सेवाकारी होना बहुत जरूरी है। सेवा करते करते सेवाभाव बढ़ता जाता है। शुक्रगुजारी भाव के बारे में फरमाया गया। जिन्होंने हमारे लिए कुछ किया है उसके लिए कुछ करना चाहिए। उपकारियों की सेवा किए बिना हम धर्मवान नहीं हो सकते। शुक्रगुजार लोगों की घटनाएं पेश की गईं। माता पिता के उपकारों की कोई गिनती नहीं हो सकती। उनके उपकारों का कर्ज़ा इतना है कि हम अंधों को पूर्ण रूप से दिखाई नहीं देता। धर्म घर से शुरू होता है। जिनको माता पिता के उपकार नजर नहीं आते। उनकी सेवा के लिए व्याकुलता पैदा नहीं होती वह धर्मवान नहीं बन सकते। धर्म का पता सम्बंधों में चलेगा। उच्च भाव सम्बंधों में

रहकर ही पैदा हो सकते हैं। शुक्रगुजार लोगों के उदाहरण पेश किए। शुक्रगुजार लोगों का धर्म की दुनिया में प्रवेश होता है। उनके हृदय में उपकारियों के लिए विशेष चिन्ताएं चलती हैं। ईमानदारी, पवित्रता, ईसाफ, कर्तव्य परायणता, श्रद्धा, शुक्रगुजारी, हमदर्दी व हानिपरिशोध आदि भावों से धर्म आता है। गुरु महाराज नेचर के विकास के क्रम में अद्वितीय शक्तियां लेकर आए हैं। जो धर्म की विज्ञानमूलक शिक्षा देते हैं व अधिकारी आत्माओं में धर्म के भाव पैदा करते हैं। ऐसे गुरु को समझना, उसकी शिक्षा को समझना हमारा परम सौभाग्य है।

14 अप्रैल 2004 सुबह 8:30 बजे एक सभा की गई। इसके सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। इसमें बताया गया कि नेचर के अंदर अटल नियम काम करते हैं। नेचर के नियम अनाप शनाप नहीं है। परन्तु नेचर नियमों में बंधी हुई है। हमारे अंदर सब से प्रधान भाव अहं का है। हम ज्यादातर अपने आप को प्यार करते हैं, अपनी इच्छाओं का ख्याल करते हैं। जब हमारे सुख अनुराग पर चोट लगती है तो हमें अच्छा नहीं लगता व घृणा पैदा होती है। मैं का प्यार अनुचित प्यार है। अहं के कारण हम किसी बात को बर्दाश्त नहीं कर सकते। अहं घटने पर हम दूसरों को माफ करने की हालत में रहते हैं। हम मनुष्यों ने अपनी नीच शक्तियों को रखकर भी अपने आप को माफ किया हुआ है। हम मनुष्य की आत्मा की गठन अधूरी है। सब के अंदर नीच अनुराग व नीच घृणाएं हैं अगर हम अपनी नीचता रख कर भी अपने आप को माफ कर रहे हैं तो फिर दूसरों को माफ क्यों नहीं करते। जब हमारे अंदर अहं बढ़ा होगा तो दूसरे

के अधिकारों का पता नहीं रहेगा व अपनी नीचता नज़र नहीं आएगी। अगर कुछ सीखना है या पाना है तो दीन बनना पड़ेगा। भगवान देवात्मा के देवप्रभाव दीन बनने से मिल सकते हैं। सच्चे दिल से प्रार्थनाशील होकर देवप्रभाव मिल सकते हैं। गुरु महाराज ने फरमाया है कि जितना आपके लिए सम्भव हो सकता है अपनी नीचता को देखो व उसे लिखो। हानि प्राप्त जनों के साथ शुभ व्यवहार करो। हानि परिशोध का भाव धर्मवान बनने के लिए बहुत जरूरी है। इस भाव से हमारा अहं कम होता है। श्रद्धेय श्रीमान हरनाम सिंह जी की घटनाएं सुनाई गई कि किस प्रकार भगवान की रोशनी पाकर हानि परिशोध का भाव पैदा करने लगे। देवप्रभावों के बिना हमारे अंदर की नीच शक्तियों का भयानक रूप नजर नहीं आ सकता। उनसे क्या मेरी व दूसरों की हानियां हो होती हैं, उसका भी पता नहीं चल सकता। उनका हानि परिशोध नहीं हो सकता। हानि परिशोध के साधनों में से गुजरकर ही हमारा सच्चा उद्धार होता है। हम अपने अहं के कारण एक दूसरे की गलतियों को देखते रहते हैं। अपनी गलतियां नजर नहीं आतीं। हमें इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि मैं भी हूं व और भी हैं। भगवान देवात्मा फरमाते हैं कि मेरे प्रभाव पाने के लिए दूसरों के गुण चिंतन करो व दीन बनो। दूसरों के उपकार को याद करके उनके प्रति शुक्रगुजार बनो। अपनी रोजाना नीचता देखें उनका परिशोध करे व दीन बनें। अध्यात्मिक नियम सभी के लिए एक समान हैं। जब भी हमारे अहं पर चोट लगती है तो हम उल्ट पुल्ट हो जाते हैं। हम भगवान के देवप्रभावों को पाकर दीन बन सकें व

ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा सकें।

13 अप्रैल, 2004 को रात 8:30 बजे एक सभा की गई। इस सभा के सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। सभापति जी ने बताया कि शुक्रगुजारी की अवर्तमानता से उस भाव को जाना जाता है। नाशुक्रगुजारों की नगरी में इंसानों का जीना मुश्किल हो जाता है। मनुष्य नाशुक्रगुजारों के बीच दुःखी रहता है। व दुःख से तड़फ उठता है। मनुष्य की प्रकृति सुख अनुरागी है। जब तक उसको अपने सम्बंधों से जुड़कर सुख मिलता है तब तक वह उससे जुड़ा रहता है। जब अपने सम्बन्धियों से अपनी गर्जे पूरी नहीं होती उसका साथ छोड़ देता है। भगवान देवात्मा तड़फ उठते थे जब यह देखते थे कि बच्चा माता पिता का अपमान करता है, माता पिता को गलत बोलता है। परन्तु हम मनुष्यों की हालत इतनी हीन है कि हम नाशुक्र होकर भी, उपकारी को तड़फा कर भी संतुष्ट रहते हैं। भगवान देवात्मा हमारी नाशुक्रापन की प्रकृति को देखकर तड़प उठते थे। शुक्रगुजारी से भरा जीवनधारी धर्म की दुनिया में प्रवेश करता है। गुरु महाराज फरमाते हैं जो जन उपकार पाकर उसके लिए प्रति उपकार नहीं करते वह हमारे

सन्मुख कमीना, पापी व खुदगर्ज हैं। देवात्मा के देवअसर अधिकारी आत्माओं को शुक्रगुजार बनाते हैं। शुक्रगुजार लोगों के उदाहरण दिए गए। मनुष्य का स्वभाव ऐसा है कि उनको ठोकरें मारता है जो उसको प्यार करते हैं, सच्ची हमदर्दी रखते व हितकारी होते हैं व उनको प्यार करता है जो उसको ठोकरे मारते हैं। शुक्रगुजारों की दुनिया बिल्कुल अलग होती है। मनुष्य को किसी परमात्मा के जाप करने का जरूरत नहीं परन्तु माता पिता के उपकारों को याद करने, उनके उपकारों को महसूस करने का संग्राम होना चाहिए। शुक्रगुजार बेटे माता पिता को इतना सम्मान देते हैं कि जैसे लोग अपने धार्मिक ग्रन्थों का सम्मान करते हैं। माता पिता के उपकारों की गिनती नहीं हो सकती। उपकारी माता पिता गिनती जानते ही नहीं। वह हमेशा अपनी संतान पर जान देने के लिए भी तैयार रहते हैं। गुरु महाराज की कृपा द्वारा बने शुक्रगुजार जनों के उदाहरण पेश किए गए। गुरु महाराज के बिना हमारे जीवन का कोई ठिकाना नहीं है। हम उच्च भावों में ज्यादा से ज्यादा विकसित हो सकें व गुरु के सच्चे सेवक बन सकें।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक “धर्म जीवन” ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

सम्पादक डा० विनोद खेड़ा

